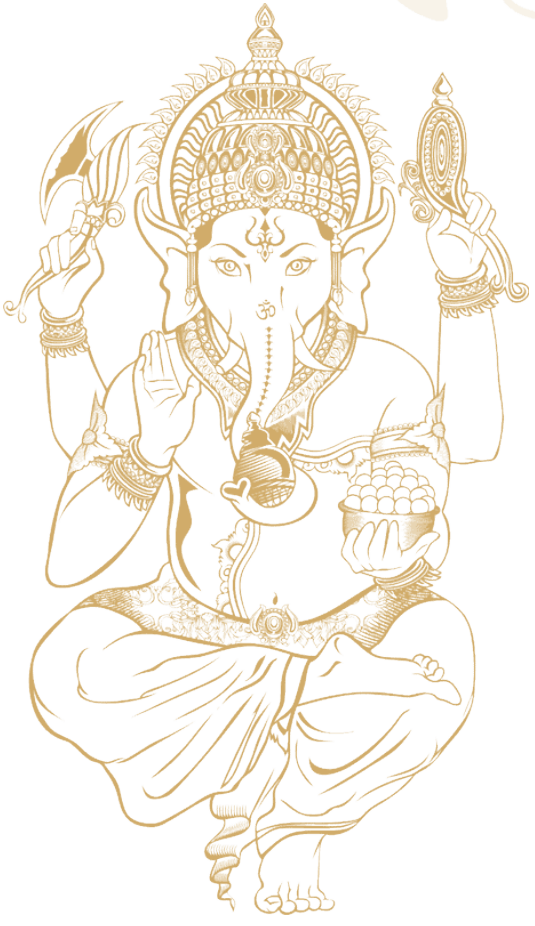

Baby girl

03 Nov 2025

08:24 PM

Bareilly

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120207101**

तिथि 03/11/2025 **समय** 20:24:00 **वार** सोमवार **स्थान** Bareilly **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:08
अक्षांश 28:20:00 उत्तर **रेखांश** 79:24:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:12:24 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	23:04:05 घं
वेलान्तर	00:16:29 घं
सूर्योदय	06:25:43 घं
सूर्यास्त	17:26:05 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	कार्तिक
पक्ष	शुक्ल
तिथि	13
नक्षत्र	रेवती
योग	वज्र
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	गज
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	पूर्व
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दे-देविका
पाया(रा.-न.)	ताम्र-स्वर्ण
होरा	बुध
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

बुध 12वर्ष 10मा 0दि

बुध

03/11/2025
05/09/2038

	00/00/0000
	03/11/2025
शुक्र	29/11/2027
सूर्य	05/10/2028
चन्द्र	06/03/2030
मंगल	03/03/2031
राहु	20/09/2033
गुरु	27/12/2035
शनि	05/09/2038

योगिनी

उल्का 4वर्ष 6मा 11दि

उल्का

03/11/2025
16/05/2030

	03/11/2025
सिद्धा	16/07/2026
संकटा	15/11/2027
मंगला	15/01/2028
पिंगला	16/05/2028
धान्या	14/11/2028
भ्रामरी	16/07/2029
भद्रिका	16/05/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			05:21:28	मिथु	मृगशिरा	4	मंगल	सूर्य	---	0:00			
सूर्य			17:13:32	तुला	स्वाति	4	राहु	शुक्र	नीच राशि	0.88	अमात्य	पितृ	वध
चंद्र			19:55:57	मीन	रेवती	1	बुध	शुक्र	सम राशि	1.45	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल		अ	05:07:18	वृश्चि	अनुराधा	1	शनि	शनि	स्वराशि	0.99	मातृ	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			10:16:55	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	शुक्र	सम राशि	1.04	भ्रातृ	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु			00:49:34	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	मंगल	उच्च राशि	1.17	कलत्र	धन	मित्र
शुक्र			01:37:22	तुला	चित्रा	3	मंगल	बुध	मूलत्रिकोण	1.34	पुत्र	कलत्र	साधक
शनि	व		01:27:48	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	0.89	ज्ञाति	आयु	मित्र
राहु	व		22:46:21	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	शनि	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		22:46:21	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	शनि	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

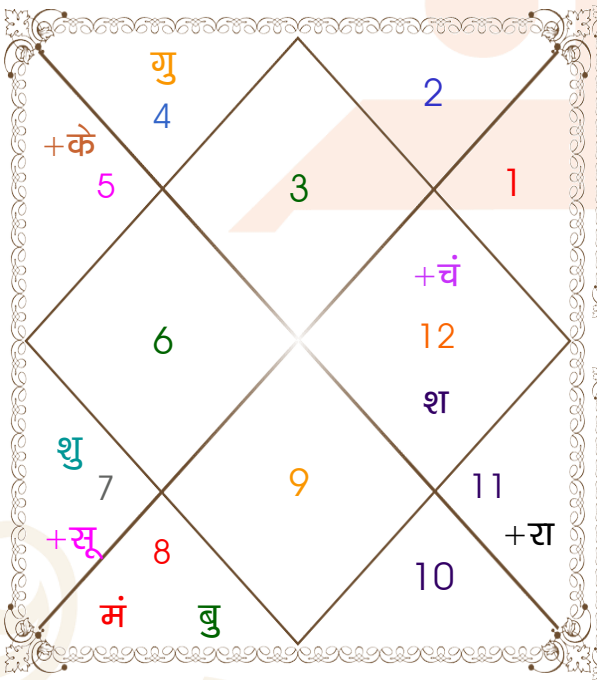

चन्द्र कुंडली

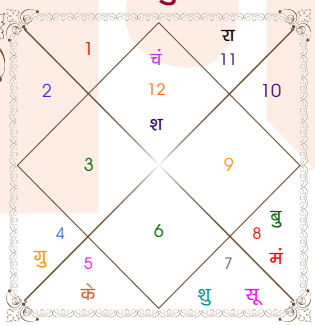

नवमांश कुंडली

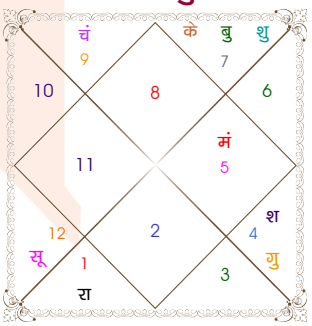

सर्वाष्टकवर्ग

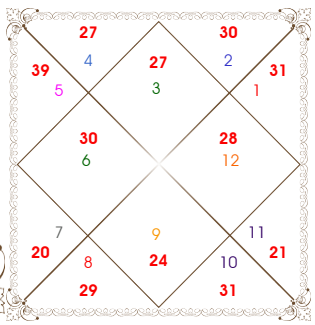

दशमांश कुंडली

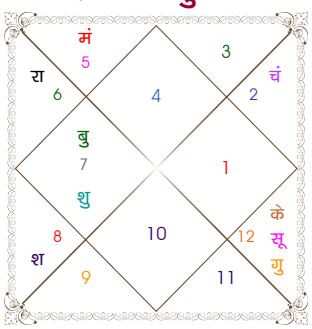

Nakshatra jyotish Ratan kendra
C-10 Rajendra Nagar Bareilly
919458160000
amitkalra40@gmail.com

नक्षत्रफल

आप रेवती नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी अन्त्य, वर्ण ब्राहमण, गण देव, वर्ग सर्प तथा योनि गज होगी। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "दे" अक्षर से प्रारम्भ होगा। यथा- देवकी, देवबाला आदि

आप स्वभाव से ही एक सज्जन महिला होंगी तथा अन्य सामाजिक जनों से मधुर एवं मित्रता पूर्ण व्यवहार करेंगी जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे तथा आपको उचित मान सम्मान भी प्रदान करेंगे। धन सम्पति से आप सर्वथा सम्पन्न रहेंगी एवं जीवन में सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगी। साथ ही आप एक संयमशील महिला होंगी तथा इन्द्रियों को पूर्ण रूप से वश में करके संयमित जीवन व्यतीत करेंगी। आप में ईमानदारी का गुण स्वभाव से ही विद्यमान रहेगा तथा ईमानदारी से धनार्जन करके एवं व्यापारादि में निर्मल मन से लाभार्जन करेंगी। इसके अतिरिक्त आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा अपने अधिकांश महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगी।

चारुशीलविभवो जितेन्द्रियः सद्धनानुभवनैकमानसः।
मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वभाव वाला, ऐश्वर्य युक्त, जितेन्द्रिय, नेक नीयत से द्रव्य लाभ करने वाला तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है।

आप के समस्त शरीर अंग प्रत्यंग देखने में सुन्दर रहेंगे। समाज के सभी वर्गो में आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा आप भी सबको समान रूप से समझकर यथाशक्ति उनकी सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगी। आप शौर्योचित गुणों से भी सुशोभित रहेंगी तथा साहसिक एवं पराक्रमी कार्यों को करने के लिए उत्सुक रहेंगी। आप का हृदय भी निर्मल रहेगा एवं सभी लोगों से आप स्नेह एवं सम्मान का व्यवहार करेंगी। साथ ही एक धनवान महिला के रूप में भी समाज में आपका यश रहेगा।

सम्पूर्णाङ्गः सुभगः शूरः शुचिरर्थवान्पौष्णे।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला जातक शारीरिक अंगो से पूर्ण सम्पन्न, सर्वसमाजप्रिय, रणप्रिय, हृदय से शुद्ध एवं धन से सुसम्पन्न होता है।

आपके समस्त सांसारिक तथा महत्वपूर्ण कार्य दक्षता से सम्पन्न होंगे एवं इनमें प्रायः आप सफलता अर्जित करती रहेंगी। आपको नाना प्रकार के शास्त्रों का भी अच्छा ज्ञान रहेगा। अतः एक विदुषी के रूप में भी आप समाज में प्रतिष्ठित तथा प्रख्यात रहेंगी। इसके अतिरिक्त वैभव युक्त रहकर आप जीवन से प्रसन्न रहेंगी।

सम्पूर्णाङ्गः शुचिर्दक्षः साधुः शूरो विचक्षणः।
रेवती सम्भवे लोके धनधान्यैरलंकृतः।।
मानसागरी

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सब अंगों से पूर्ण, पवित्र, कार्यों में दक्ष, साधु, शूरवीर, पंडित एवं धन धान्यों से सर्वथा अलंकृत रहता है।

आपकी जाघों में कोई चिन्ह या निशान भी हो सकता हैं। आप सौन्दर्य युक्त रहेगी तथा सलाह आदि के कार्य में निपुण रहेगी। फलतः सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे तथा यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप सुन्दर पति एवं गुणवान पुत्रों से युक्त रहेंगी एवं साथ ही आपके मित्र भी शिक्षित एवं सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगे। आप दृढ निश्चय से युक्त रहेंगी तथा अपने सम्पूर्ण कार्यों को दृढमति से सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त आप स्थिर धन से भी युक्त रहेंगी एवं जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करेंगी।

रेवत्या मुरूलांच्छनोपगतनुः कामातुरः सुन्दरो।
मंत्री पुत्रकलत्रमित्रसहितो जातः स्थिरः श्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य जाघों में चिन्ह वाला, कामातुर, सुन्दर, मंत्री या सलाह देने वाला, दृढ़, श्रीयुत, स्त्री, पुत्र तथा मित्रों से युक्त होता है।

आप ताम्र पाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप राज्य या सरकार से नित्य धनलाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा समाज में दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। साथ ही आप सन्तोषी स्वभाव से भी युक्त रहेंगी। आपका आचरण श्रेष्ठ रहेगा। अतः सभी लोग आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे। जीवन में विविध प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुखपूर्वक जीवन में इनका उपभोग करेंगी। माता पिता के प्रति आप पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी तथा उनसे भी आपको पर्याप्त धन सम्पत्ति प्राप्त होगी ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा विदुषी के रूप में आपका सम्मान होता रहेगा। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगी तथा वाहन एवं भूमि आदि जायदाद से भी सुसम्पन्न रहेंगी। धर्म के प्रति आपकी निष्ठा रहेगी तथा स्वभाव में साहस का समावेश रहेगा। आप परोपकार संबंधी कार्यों में भी में तत्पर रहेंगी तथा सज्जन पुरूषों का नित्य आदर करेंगी। इसके अतिरिक्त दानशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगी।

मीन राशि में पैदा होने के कारण आप सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व की स्वामिनी होंगी। आपका ललाट विस्तृत तथा नासिका उन्नत रहेगी। आपकी आखें देखने में अति सुन्दर होंगी एवं सभी शरीर के अंग पुष्ट एवं सुन्दर रहेंगे। साथ ही आपकी कमर भी पतली होगी। शिल्प विद्या या चित्रकारी में आप विशेष रूप से रूचिशील रहेंगी तथा परिश्रम पूर्वक इस क्षेत्र में सफलता एवं ख्याति अर्जित कर सकेंगी। आपके शत्रु आपसे हमेशा पराजित रहेंगे एवं आपका

विरोध करने में वे प्रायः असमर्थ ही रहेंगे। गायन विद्या में भी आपका रुझान रहेगा तथा समय समय पर इसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी। आपको कई शास्त्रों का भी अच्छा ज्ञान रहेगा एवं एक विदुषी के रूप में भी आपकी समाज में लोगों के मध्य प्रतिष्ठा एवं ख्याति रहेगी। आप एक धार्मिक महिला होंगी एवं धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा निष्ठा का भाव विद्यमान रहेगा एवं नियमपूर्वक धार्मिक प्रवृतियों का आप नित्य आचरण करती रहेंगी। समाज में कई लोगों से आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध भी रहेंगे। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुरता से युक्त रहेगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। जीवन में आप भौतिक सुख संसाधनों से सुसम्पन्न रहेंगी एवं सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। क्रोध की आप में अल्पता रहेगी। आप सरकारी सेवा में भी नियुक्त होंगी एवं जमीन या खान से उत्पन्न द्रव्यों से धनार्जन करने में समर्थ रहेंगी। पति को आप हमेशा अपने वश में रखेगी एवं वे सभी सांसारिक कार्यों को आपके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आपका स्वभाव सुशील रहेगा एवं लोगों से मधुर संबंध रहेंगे। साथ ही समुद्री जहाज में यात्रा करने या नाव आदि में सैर करने की आपकी तीव्र इच्छा रहेगी एवं इससे आपको अपूर्व प्रसन्नता प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप दानी स्वभाव से भी युक्त रहेंगी तथा इस प्रवृति का जीवन में अनुपालन करने में तत्पर रहेंगी।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।

सारावली

आप समुद्र या जल से उत्पन्न द्रव्यों यथा शंख, मोती आदि रत्नों में सुशोभित रहेंगी एवं व्यापारादि में इनसे आपको पर्याप्त मात्रा में लाभार्जन होता रहेगा। साथ ही आप जीवन काल में किसी मित्र, व्यक्ति या संबंधी की धन सम्पत्ति को प्राप्त करेंगी तथा जीवन में सुखपूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगी। सुन्दर एवं नवीन वस्त्रों के प्रति आपके मन में विशेष आसक्ति तथा अनुराग का भाव रहेगा एवं इसके लिए नित्य प्रयत्नशील भी रहेगी। इसके अतिरिक्त आप मध्यम कद से युक्त रहेंगी।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरुचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।

बृहज्जातकम्

आप बार बार जल पीने की इच्छा व्यक्त करेंगी एवं इसका उपयोग भी प्रायः करती रहेंगी। अपने पति के ऊपर आपका हमेशा पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उनसे आप पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। अतः आपका सांसारिक जीवन सुखमय रहेगा। आप उच्चकोटि की विदुषी होंगी तथा कृतज्ञता के सद्गुण से भी सुसम्पन्न रहेंगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगे। इसके साथ ही आप एक परम सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में कई शुभ एवं

महत्वपूर्ण कार्यों में भाग्यबल से ही सफलता अर्जित कर सकेंगी।

अत्यम्बुपानः समचारूदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्वान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आपका भौतिक जीवन संयम से पूर्ण रहेगा एवं इन्द्रियों पर आपका पूर्ण रूप से नियंत्रण रहेगा। आप एक चतुर तथा बुद्धिमती महिला होंगी एवं अपने समस्त कार्यों को चतुराई तथा बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगी। जल क्रीड़ा के लिए भी आप अत्यन्त ही लालयित रहेगी तथा इससे आप अत्यन्त ही प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। आपकी बुद्धि भी निर्मल रहेगी तथा अन्य जनों से आप धोखा नहीं करेंगी।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

जीवन में आप अधिकांश रूप से उदर पोषण के कार्यों में ही व्यस्त रहेंगी। यदा कदा आपके आय स्रेतों में व्यवधान भी उत्पन्न होंगे जिससे आपको आर्थिक परेशानी की अनुभूति होगी। आप कान्तिमान शरीर से युक्त रहेगी एवं इससे आपके सौन्दर्य तथा व्यक्तित्व में निखार रहेगा। पिता से आप धन सम्पति प्राप्त करेंगी तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। साहस का आप में अभाव नहीं रहेगा तथा पराक्रमी तथा साहसिक कार्यों को करने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपका स्वभाव सन्तोषी रहेगा।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारूकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप गम्भीर प्रवृति से युक्त रहेंगी एवं शौर्य गुणों से सुशोभित रहेंगी। समाज में आप एक प्रतिष्ठित महिला के रूप में सम्माननित एवं श्रद्धेय रहेंगी। आपकी प्रवृति कृपणता से भी युक्त रहेगी इससे अन्य लोग आपसे कभी कभी असुविधा प्राप्त करेंगे। आप अपने परिवार में प्रिय तथा आदरणीय रहेंगी तथा सभी परिवारिक जन आपका यथोचित सम्मान करेंगे। सेवा कार्यों में भी आप रूचिशील रहेंगी। इससे अन्य लोग आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। आप तीव्र गति से चलना पसन्द करेंगी। आपका चाल चलन भी श्रेष्ठ रहेगा तथा अन्य लोगों के लिए अनुकरणीय तथा प्रशंसनीय रहेगा। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग के मध्य भी आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।

नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

इस प्रकार आप अपने आकर्षक सौन्दर्य व्यक्तित्व एवं विद्धता के कारण समाज में प्रसिद्ध तथा सम्माननीय रहेंगी। इसके अतिरिक्त अन्य लोगों से भी आपके मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे तथा सम्पूर्ण जीवन सामान्यतया प्रसन्नता एवं सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं श्रेष्ठ होगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आप की बुद्धि सरलता के भाव से सुशोभित रहेगी एवं सादगी पूर्ण ढंग से सभी भावों को ग्रहण करने की प्रतिभा से सुसम्पन्न रहेंगी। आप को थोड़ी मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करना अच्छा लगेगा तथा आप इसके लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगी। आप अन्य लोगों के विषय में पूर्ण ज्ञान रखेगी तथा अच्छे बुरे की पहचान करने में सर्वथा सक्षम रहेंगी। साथ ही स्वयं उत्तम विद्वानों द्वारा वणित सद्गुणों से युक्त रहेंगी एवं जीवन में सुखैश्वर्य से युक्त होकर प्रसन्नतापूर्वक जीवन यापन करेंगी।

आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा। आप में दानशीलता की भावना प्रारम्भ से ही विद्यमान रहेगी तथा नित्य यथाशक्ति आप इसका अन्य जनों के समक्ष अनुपालन करती रहेंगी। आपको सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करना अच्छा लगेगा एवं अनावश्यक भौतिकता की आप उपेक्षा ही करेंगी। इसके अतिरिक्त आप एक विदुषी महिला होंगी एवं समाज में सर्वत्र आपका सम्मान तथा यश व्याप्त रहेगा।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

गज योनि में जन्म होने के कारण आप उच्चाधिकार प्राप्त लोगों के मध्य प्रिय एवं आदरणीय रहेंगी तथा इनसे आपको जीवन में पूर्ण सहयोग तथा आदर प्राप्त होता रहेगा। आप एक बलशाली महिला होंगी तथा अपने अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को अपने बल से ही सिद्ध करने में सफलता अर्जित करेंगी। आप को आवश्यक सुख संसाधन जीवन काल में उपलब्ध होंगे तथा सुखपूर्वक आप इनका उपभोग करती रहेंगी। आप किसी उच्चाधिकारी की सहयोगी या स्वयं भी कोई उच्चाधिकारी हो सकती हैं। साथ ही आप उत्साह पूर्वक कठिन से कठिन कार्य को भी सिद्ध करने में सक्षम रहेंगी।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति दशम भाव में है। अतः माता का आप पूर्ण स्नेह प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन सम्पत्ति तथा अन्य आवश्यक सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगी तथा जीवन के आवश्यक कार्यों में आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आप आजीविका, व्यापार तथा यश प्राप्ति भी उन्हीं के सहयोग से अर्जित करने में सफल होंगी।

आप उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा यदा कदा आपस में सैद्धान्तिक मतभेद होंगे किन्तु उससे आपके संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। आप भी उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा हर सम्भव उनका सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगी। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य रूप से शुभ ही समझी जाएंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य पंचम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा किंचित शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करते रहेंगे। धनैश्वर्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपको वे वांछित आर्थिक सहयोग भी देते रहेंगे जिससे आप को कोई भी कष्ट न हो।

आप भी उनके प्रति पूर्ण आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आप के मध्य आपसी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनिक तनाव तथा कटुता उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप उनकी सुखसुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा आवश्यकतानुसार उन्हें आर्थिक या अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यो को करने

में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी तथा पौर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टि करण, शुक्रवार चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि का चन्द्रमा हमेशा अशुभ एवं अनिष्टकारी रहेगा। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष रूप से सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मन में चिन्ता, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य शुभकार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की श्रद्धापूर्वक आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से वृहस्पतिवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत वस्त्र पीत पुष्प पीत चन्दन, हल्दी तथा चने की दाल आदि वस्तुओं का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ प्रभाव समाप्त होकर शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।